न ! यूपी की कानून-व्यवस्था अभी ठीक नहीं

बोले राज्यपाल

- अपने पद की लक्ष्मणरेखा जानता
- राजनीतिक बयानों पर नहीं करता टीका-टिप्पणी

अपनी सक्रियता के कारण सुर्खियों में रहने वाले राज्यपाल राम नाईक कई बार अखिलेश सरकार को परेशानियों में डालते रहे हैं। हालांकि वह कहते हैं कि उनके और मुख्यमंत्री के संबंध मधुर हैं। सरकार व राजभवन के बीच खटास नहीं बल्कि दशहरी आम जैसी मिठास है। वैसे नाईक न सूबे की कानून-व्यवस्था व उच्च शिक्षा से संतुष्ट हैं और न ही समग्र शासन से। खुद पर लगते आरोपों पर नाईक कहते हैं कि वह सांविधानिक पद पर हैं, इसलिए राजनीतिक बयानों पर कोई टीका-टिप्पणी नहीं करेंगे लेकिन अपने पद की लक्ष्मण रेखा वह भलीभांति जानते-समझते हैं। 22 जुलाई को उन्हें राज्यपाल की कुर्सी संभाले हुए दो वर्ष हो जाएंगे। इस मौके पर राम नाईक से दैनिक जागरण के राज्य ब्यूरो प्रमुख अजय जायसवाल ने बातचीत की। प्रस्तुत हैं प्रमुख अंश-

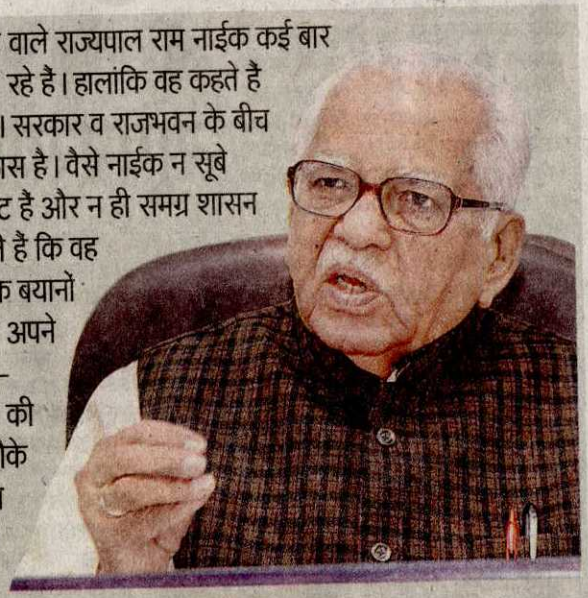

● सूबे की कानून-व्यवस्था पर क्या कहेंगे।

देखिए, मेरा आकलन पहले जैसा ही है यानी अभी बहुत सुधार की जरूरत है।

● सरकार और राजभवन के बीच संबंध ठीक नहीं दिखते ?

ऐसा बिल्कुल नहीं है। मुख्यमंत्री से मेरे मधुर संबंध है। काम-काज को लेकर समय-समय पर मुलाकात, बातचीत और पत्र व्यवहार होता रहता है। सुझाव भी देता रहता हूं।

● मंत्री आजम, शिवपाल हों या प्रो. राम गोपाल, आप सभी के निशाने पर रहते हैं।

(मुस्कराते हुए) मै किसी के राजनीतिक बयान पर टीका-टिप्पणी नहीं करूंगा। मैने सदैव सांविधानिक व्यवस्था का पालन किया है और करता रहूंगा। वह चाहे लोकायुक्त की नियुक्ति का मामला रहा हो या फिर एमएलसी नामित करने का।

● आपकी सक्रियता से तो सभी परेशान हैं।

मै 82 प्लस का हूं। राजनीति में जितना सक्रिय था, उतना ही राज्यपाल रहते हुए हूं। जानबूझकर किसी के पीछे पड़ने जैसी कोई बात नहीं। सुबह 5.30 से रात 11 बजे तक काम करता हूं। दोपहर में सोता भी नहीं। लोगों से मिलने के अलावा उनके बीच जाता रहता हूं। राजभवन के दरवाजे सभी के लिए खुले हैं। मै तो राजनीति में कार्यकर्ता से केंद्रीय मंत्री तक रहा। यहां लंबे समय राज्यपाल रहे टीवी राजेस्वर व बीएल जोशी मूल रूप से नौकरशाह थे। एक राजनेता व नौकरशाह के कार्य व्यवहार में अंतर को समझा जा सकता है।

● आजम ने आप पर गंभीर आरोप लगाए है? आप भी उन्हें संसदीय कार्यमंत्री पद के लायक नहीं मानते ?

मेरे बारे में कौन क्या बोलता है, उससे मुझे फर्क नहीं पड़ता। नैतिकता की राजनीतिक क्षेत्र में भी गिरावट आयी है। विधानसभा में मुझ पर जिस तरह की टिप्पणी की गई, उस पर विधानसभा अध्यक्ष व मुख्यमंत्री को पत्र लिखा। अब क्या करना है, यह तो मुख्यमंत्री व पार्टी जाने। जनता सब देख-समझ रही है। वही सरकार के काम पर मुहर लगाती है।

● राजनीति में गिरावट का क्या कारण मानते है ?

- मै तीन बार विधायक व पांच बार सांसद रहा। राजनीति में धन व बल का चलन बढ़ा है, जिससे अच्छे लोगों के सामने संकट है। फिर भी उन्हें हिम्मत कर आगे आना चाहिए। आखिर आग में डालने से ही सोना निखरता है। मेरे खिलाफ भी 2004 के लोस चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी व अभिनेता गोविंदा ने माफिया सरगना दाऊद का सहारा लिया था।

● बतौर राज्यपाल दूसरे वर्ष का कार्यकाल कैसा रहा ?

22 जुलाई को मुझे दो वर्ष पूरे हो रहे है। सालभर में क्या खास किया, इसका ब्योरा 21 जुलाई को बताऊंगा। 'राजभवन में राम नाईक' नाम से दूसरे वर्ष के कार्यकाल का ब्योरा उसी दिन पेश करूंगा।

● मथुरा, कैराना व दादरी पर राष्ट्रपति को भेजी रिपोर्ट में क्या है ?

राज्य की स्थिति व सरकार के कामकाज पर नियमित रूप से केंद्र व राष्ट्रपति को रिपोर्ट भेजता हूं। मथुरा, कैराना व दादरी की घटनाओं पर भी गोपनीय रिपोर्ट भेजी है इसलिए कुछ बताऊंगा नहीं। इतना ही कहूंगा कि मथुरा में अतिक्रमण के चलते हुई घटना पर मेरे सुझाव को मानते हुए सरकार काम कर रही है। एक बार अवैध कब्जे की भूमि सामने आने के बाद अपराध भी घटेंगे।

● राज्य की गवर्नेंस पर क्या ख्याल है ?

जिस तरह से अफसरों के तबादले होते है और कामकाज देखने को मिल रहा है उससे गुड गवर्नेंस बेहतर नहीं लगता। डीएम-एसपी के जल्दी-जल्दी तबादले से वह कैसे अपना बेस्ट दे सकते है। उत्तर प्रदेश नगर पालिका वित्तीय संसाधन विकास बोर्ड के अध्यक्ष का पांच वर्ष का कार्यकाल जब खत्म होने को है, तब उसके चार सदस्य बनाए जाते है और इनमें से एक सदस्य शपथ भी नहीं लेता। ऐसे में कैसे बेहतर काम की कल्पना कर सकते है।

● उच्च शिक्षा की स्थिति पर क्या कहेंगे ?

मै 26 विश्वविद्यालयों का कुलाधिपति हूं। शैक्षिक सत्र नियमित करने के साथ ही उच्च शिक्षा में सुधार हो रहा है। समय से प्रवेश, कुछ हद तक नकल रहित परीक्षा व परिणाम घोषित होने के साथ दीक्षांत समारोह हुए है। फिर भी और स्थिति सुधारनी है। इसके लिए छह-छह माह में कुलपतियों की बैठक कर रहा हूं। 30 जुलाई को झांसी में बैठक है।

● परिवार को कितना समय देते है।

-पत्नी को राजभवन सोने का पिंजरा लगता है क्योंकि अच्छी हवा, हरियाली, ताजा सब्जी, गाय का दूध आदि तो यहां है लेकिन मुम्बई की तरह वह न बाहर जा सकती है और न ही मिलने-जुलने वाले है। मै जरूर परिवार को कहीं ज्यादा समय दे पा रहा हूं क्योंकि राजनीति में रहते न खाने का समय तय था और न ही घर में रहने को इतना वक्त मिलता था।

● नगरीय निकाय संबंधी विधेयक पर क्या हो रहा ?

राजभवन में एक मात्र उत्तर प्रदेश अल्पसंख्यक आयोग (संशोधन) विधेयक 2015 ही विचाराधीन है। नगरीय निकाय संबंधी दोनों विधेयक मै पहले ही राष्ट्रपति को भेज चुका हूं, इसलिए मेरे स्तर से अब उस मामले में कुछ नहीं होना है।

● क्या शराब बंदी के पक्षधर है।

समाज के लिए शराब अच्छी नहीं है, इसलिए व्यक्तिगत तौर पर मै शराब बंदी के पक्ष में हूं लेकिन शराब बंदी पर निर्णय तो राज्य सरकार को करना है।